सेमेस्टर II
हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य - दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास
   a. भाषायी कौशलों का विकास
   b. भाषायी कौशलों का महत्व
   c. भाषा के कौशल
   d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
   e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग
   f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल
   g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास
   a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल
   b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर
   c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर
   d. वाचन शिक्षण की विधियाँ
   e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें
   f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास
   a. लेखन कौशल
   b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता
   c. लेखन कौशल का महत्व
   d. लेखन शिक्षण का समय
   e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा
   f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ
   g. शुद्ध लेखन तत्व

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

लेखन शिक्षण की आवश्यकता—भाषा एक सृजनात्मक शक्ति है और विचार विनिमय का एक साधन है, उसके प्रमुख दो उद्देश्य हैं—प्रथम भाव ग्रहण एवं द्वितीय भाव प्रकाशन। भाव प्रकाशन में बालक बोलकर या लिखकर अपने भाव प्रकट करता है। उच्चारित रूप काल के सन्दर्भ में अस्थायी होता है, जबकि लिखित रूप स्थायी होता है, भाषा का लिखित रूप ही हमारी समृद्धि का द्योतक है। समय-समय पर प्रचलित भाव प्रकाशन की शैलियाँ तथा मान्य विचार आज भाषा के लिखित रूप से ही हमें उपलब्ध हो पाते हैं।

लिखित अभिव्यक्ति एक कौशल है। भाषा का अधिकार प्राप्त करने के लिए जिस प्रकार सुनना, बोलना और पढ़ना महत्व रखता है, उसी प्रकार लिखने का भी अपना विशेष महत्व है। **श्रीमती मॉण्टेसरी** के अनुसार, "लेखन एक शारीरिक क्रिया है जिसमें बालकों के हाथों की गतिविधियाँ करनी पड़ती हैं।" मनोवैज्ञानिक व शिक्षाशास्त्रियों में इस विषय पर बड़ा मतभेद है कि बालकों को पहले लिखना सिखाया जाना चाहिए अथवा पढ़ना सिखाया जाना चाहिये। मॉन्टेसरी ने लिखने की क्रिया को सरल मानकर बालक को पहले लिखना सिखाने की बात पर जोर दिया, लेकिन लेखन की क्रिया वाचन की क्रिया से कठिन है। पढ़ने के लिए बालक को केवल अक्षर की आकृति का ज्ञान ही पर्याप्त होता है, लेकिन लिखने के लिए अंगुलियों की माँसपेशियों को यथोचित घुमाने का पर्याप्त अभ्यास भी होना चाहिये। लेखन कार्य में अक्षर की रूपात्मक स्मृति और उसका चित्रण एक साथ होता है। यदि शब्दों की ध्वन्यात्मक परिचय बालकों को पहले से ही प्राप्त हो तो उनके लिए वाचन के सहारे लिखना सीखना अधिक सुविधाजनक होगा। यह अनुभवजन्य है कि नई भाषा सीखने में छः सप्ताह लगते हैं तो उसे लिखना सीखने में कहीं अधिक समय लगता है।

Scanned with CamScanner